गीता जयंती

संत श्री आसारामजी आश्रम
द्वारा प्रकाशित

दिसम्बर
१९९६

6/-

ऋषि प्रसाद
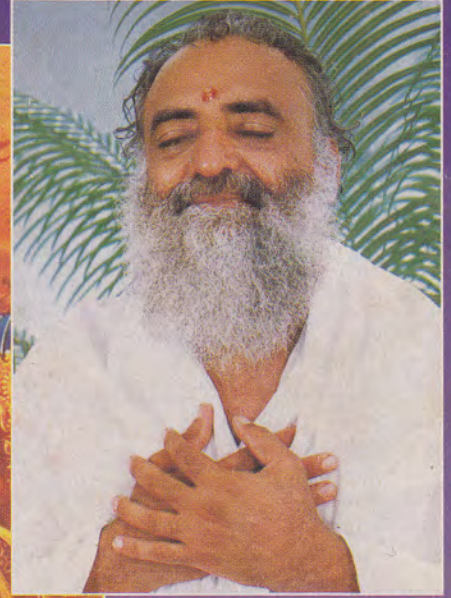
पूज्यपाद संत श्री
आसारामजी बापू

वर्ष : ७
अंक : ४८

गीतायाः श्लोकपाठेन गोविन्दस्मृतिकीर्तनात् ।
साधुदर्शनमात्रेण तीर्थकोटिफलं लभेत् ॥

ऋषि प्रसाद

वर्ष : ७
अंक : ४८
९ दिसम्बर १९९६

सम्पादक : क. रा. पटेल
प्रे. खो. मकवाणा

मूल्य : रू. ६-००

सदस्यता शुल्क

भारत, नेपाल व भूटान में
(१) वार्षिक : रू. ५०/-
(२) आजीवन : रू. ५००/-

विदेशों में
(१) वार्षिक : US $ 30
(२) आजीवन : US $ 300

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५
फोन : (०७९) ७४८६३१०, ७४८६७०२.

प्रकाशक और मुद्रक : क. रा. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५ ने
विनय प्रिन्टिंग प्रेस, मीठाखली, अहमदाबाद, भार्गवी प्रिन्टर्स,
राणीप, अहमदाबाद में छपाकर प्रकाशित किया ।

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

प्रस्तुत है...

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें ।

गुरु-आगमन

चाहूँ तुमसे बहुत मैं कहना ।
कैसे कहूँ नहीं कोई भाषा है ॥
है वो मेरा गहरा अनुभव ।
समझ सकोगे, यह आशा है ॥
यूँ ही मैं हर दिन भटका हूँ ।
शास्त्र-पुराणों में अटका हूँ ॥
जीवन क्या है देर से समझा ।
अब तक चला तमाशा है ॥
करता आया मन का पीछा ।
मोह-माया ने मुझको सींचा ॥
जीवन ढलता गया फिर भी ।
पूरी न हुई हर अभिलाषा है ॥
हुआ भाग्य से गुरु-आगमन ।
मन-बुद्धि का हुआ जागरण ॥
धन्य हो गया जीवन जबसे ।
उन्होंने मुझे तराशा है ॥

- मयंक 'पथिक'
तलवण्डी, कोटा (राज.).

गुरुवर... मेरे गुरुवर !

जब से आपका दर अपनाया है...
छूट गया सब राग-द्वेष ।
अजीब माधुर्य-सा छाया है ॥
मन में बसा ली आपकी तस्वीर ।
अब चाहे जहाँ ले जाये तकदीर ॥
बस आपके भरोसे है जीवन की बागडोर ।
चाहे संभाल लो चाहे दो छोड़ ॥
मेरे मन में तो अभिलाषा यही है ।
चरणों में रहूँ आपके साथ यही है ॥
देखना नहीं है गुरुवर आपको ।
बस यही सुना है कृपालू आप हो ॥

कृपा करो गुरुदेव मेरे अब ।
जान लो मन की और दर्श दिखा दो ॥
कर दर्शन मैं धन्य हो जाऊँ ।
बाकी जीवन आपकी पूजा में बिताऊँ ॥

ज्ञान की ज्योत जलाई...

मन भ्राँति को मिटाकर
चिर शांति हृदय जगाई गुरु आपने...
भटक रहा था मन मेरा दर-दर ।
लेता रहा जनम मैं मर-मर ॥
मेरी आवागमन मिटाई गुरु आपने...
निराधार यूँ ही जनम गँवाया ।
पल भर भी ना हरिगुन गाया ॥
मेरी अमिट तृष्णा मिटाई गुरु आपने...
में अज्ञानी जनम का पापी ।
लोभ मोह में घिरा सन्तापी ॥
मन भक्ति अलख जगाई गुरु आपने...
अब आधार मिला जो तुम्हारा ।
धन्य हुआ ये जीवन मेरा ॥
ऐसी कृपा बरसायी गुरु आपने...
मैं तो हूँ आधार तुम्हारे ।
हो उद्धारक अब ही हमारे ॥
मेरी अन्तर प्यास बुझायी गुरु आपने...

भगवत्प्राप्ति की लालसा और व्यवहार में असंगता

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

भगवत्प्राप्ति के बिना जीवन व्यर्थ है क्योंकि जिस शरीर को खिलाया-पिलाया, जिन इन्द्रियों को चखाया, सुँघाया, सुनाया - वे सब एक दिन जल जानेवाली हैं। शरीर एवं इन्द्रियों के भोगों को भोगते-भोगते तो कई भोगी मर गये, कई जिन्दगियाँ पूरी हो गयीं, कई सदियाँ बीत गयीं किन्तु भोगों से पूर्ण तृप्ति किसीको भी कहाँ मिली ?

आरंभ में तो भोग अमृत जैसे सुखदायी लगते हैं किन्तु अन्त में उनका परिणाम विष से भी बदतर होता है। विष तो केवल एक बार मारता है लेकिन विकारों का, भोगों का विष तो चौरासी लाख जन्मों तक मारता रहता है। शरीर जरूर बूढ़ा हो जाता है किन्तु वासना कभी बूढ़ी नहीं होती।

विवेक के बिना वासना निवृत्त नहीं होती और बिना सत्संग के विवेक नहीं आता और बिना भगवत्कृपा के सत्संग नहीं मिलता। इसलिये जीवन में भगवत्प्राप्ति की दिशा में प्रथम सोपान है विवेक। किस्से-कहानियाँ तो मिल जाती हैं लेकिन सत्य का संग करानेवाला, सत्यस्वरूप ईश्वर में विश्रान्ति दिलानेवाला सत्संग नहीं मिलता।

व्यवहार में असंगता आत्म-विश्रांति देगी। व्यवहार में असंगता से विकारों एवं परिस्थितियों का प्रभाव नहीं पड़ेगा, मन-बुद्धि स्वच्छ और शांत रहेंगे। स्वच्छ और शांत मन-बुद्धि को परमात्मा में विश्रान्ति पाने की सुविधा रहेगी।

सब दुःखों की निवृत्ति और परम शान्ति की प्राप्ति- इसीका नाम है मुक्ति। सभी मुक्ति चाहते हैं, बँधन कोई नहीं चाहता। जैसे- चिड़िया व तोता बँधन नहीं चाहते वैसे ही तुम भी बँधन नहीं चाहते क्योंकि तुम्हारा मूल स्वभाव ही निर्बंध है। स्वभाव तो निर्बंध है लेकिन अविद्या के संस्कार से हम बँधन की आदत में पड़ जाते हैं।

तोते को प्रारंभ में जब कैद किया जाता है तो उसे अच्छा नहीं लगता। किन्तु पिंजरे में रहते-रहते उसे कैद में रहने की आदत पड़ जाती है। जब एक बार उसे पिंजरे से मुक्त कर दिया जाये और वह उड़कर गगनगामी हो जाये तो फिर वह पुनः पिंजरे में नहीं आता।

जब तक तोता पिंजरे में है तब तक तो बँधन है ही, फिर पिंजरा चाहे लोहे का हो चाहे सोने का। लोहे के पिंजरे में पड़े तोते को देखकर सोने के पिंजरेवाला तोता भले अपने को भाग्यशाली मान ले, लेकिन है तो वह बँधन में ही। इसी प्रकार गरीब को देखकर अमीर अपने को भले भाग्यशाली मान ले लेकिन अमीर भी बेचारा न जाने कितने-कितने बँधनों से बँधा है ! बँधन कैसा भी हो, आखिरकार वह है तो पीड़ादायी ही।

पूर्ण सुख है तो केवल निर्बंधता में ही और निर्बंध होने के लिए दो बातों को समझना जरूरी है :

(१) निर्बंध होने की लालसा तीव्र कर लें, मुक्त होने की, शाश्वत सुखी होने की लालसा तीव्र कर लें।

(२) व्यवहार में असंग होते जायें। असंगता का अभ्यास बढ़ाते जायें।

शाश्वत सुख हमारा स्वभाव है। क्षणिक सुख इन्द्रियों एवं विषयों की भ्रान्ति है। तुलसीदासजी ने कहा :

बिनु रघुवीर पद जिय की जरनि न जाई ।

रघुवीर पद कहो या आत्मपद कह दो - उसे पाये बिना जिय की जलन नहीं जाती है । उस रघुवीर पद को पाने के लिए लालसा बढ़ाते जायें ।

दूसरी बात यह है कि व्यवहार का संग अपने में थोपें नहीं । ज्यों-ज्यों व्यवहार में असंग होते जायेंगे, त्यों-त्यों भगवत्प्राप्ति में सफल होते जायेंगे । व्यवहार में असंगता आत्मविश्रांति देगी । व्यवहार में असंगता से विकारों एवं परिस्थितियों का प्रभाव नहीं पड़ेगा, मन और बुद्धि स्वच्छ और शांत रहेंगे । स्वच्छ और शांत मन-बुद्धि को परमात्मा में विश्रान्ति पाने की सुविधा रहेगी । व्यवहार की असंगता से जो चित्त की शांति मिलती है वह प्रसाद की जननी है, सच्चे सुख की जननी है, मुक्ति की जननी है ।

जैसे नाविक नाव को ले जाता है और नाव नाविक को ले भागती है ऐसे ही असंगता से मन-बुद्धि को शांत होने का अवसर मिलेगा और मन-बुद्धि के शांत होने पर उनके दोष दूर होने लगेंगे । इन्द्रियगत आकर्षण, विकारों के आकर्षण दूर होने लगेंगे । यदि इन्द्रिय-आकर्षणों से दूर होने लगें तो फिर शांति सहज ही मिलने लगेगी क्योंकि शांति तो हमारा स्वभाव है, मुक्ति, निर्बंधता तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।

सांसारिक वासनापूर्ति से तृप्ति नहीं होती । क्षणिक तृप्ति होती हुई दिखती है किन्तु फिर ज्यादा बढ़ जाती है । आत्मपद पाये बिना सदा के लिए सारे दुःख किसीके भी नहीं मिटते, सारी वासनाएँ नहीं मिटतीं ।

भगवत्प्राप्ति की लालसा बढ़ा दें । भगवत्प्राप्ति की लालसा से की गयी भक्ति ईमानदारी की भक्ति होती है और संसार-प्राप्ति के लिए की गयी भक्ति बेईमानी की भक्ति होती है । भगवत्प्राप्ति की श्रद्धा सात्त्विक श्रद्धा होती है । भगवत्प्राप्ति के बिना की जो श्रद्धा होती है वह श्रद्धा राजसी और तामसी श्रद्धा होती है ।

तामसी श्रद्धावाला 'अपना बिगड़े तो बिगड़े किन्तु दूसरे का भी थोड़ा बिगाड़ करो... अभिचार मंत्र से मरवाओ दूसरे को...' - ऐसा सोचता है । अगर ऐसा ही होता तो जिन गुण्डों ने दूसरों की हत्या कर दी वे सुखी होने चाहिए लेकिन उनके दुःख नहीं मिटते वरन् और बढ़ जाते हैं । जैसे- शराबी लोग शराब पीते हैं दुःख मिटाने के लिए । शराब पीने से थोड़ी देर के लिए ज्ञानतंतु निस्तेज हो जाते हैं और व्यक्ति चेतनाशून्य हो जाता है लेकिन बाद में उसका दुःख और दुगुना हो जाता है । इसी प्रकार सांसारिक वासनापूर्ति से तृप्ति नहीं होती । क्षणिक तृप्ति होती हुई दिखती है किन्तु फिर ज्यादा बढ़ जाती है । आत्मपद पाये बिना सदा के लिए सारे दुःख किसीके भी नहीं मिटते, सारी वासनाएँ नहीं मिटतीं ।

...और आत्मपद पाने के लिए इन दोनों बातों को ठीक से व्यवहार में ले आना चाहिए : एक तो भगवत्प्राप्ति की तीव्र लालसा और दूसरी व्यवहार में असंगता ।

कश्मीर में ललिता नाम की एक लड़की की शादी बचपन में ही हो गयी । एक दिन वह ससुराल में नदी के किनारे पर पानी भरने के लिए घड़ा माँज रही थी, तब उसकी सखियों ने कहा :

''कल तो ललिता के घर श्राद्ध है इसीलिए आज वह बात नहीं कर रही है कि कहीं खीर न खिलानी पड़े...''

ललिता : ''अरे ! मैं तुम्हें क्या खीर खिलाऊँगी ? मुझे भी नहीं मिलेगी ।''

सखी : ''क्यों ? तुझे क्यों नहीं मिलेगी ?''

ललिता : ''मेरी सासुजी जब मुझे भोजन देती है न, तब कटोरे में पत्थर रखकर फिर ऊपर भात रखकर देती है ताकि मेरे ससुर को लगे कि बहुत भात देती है । जब वह भरपेट खाना ही नहीं देती तो खीर क्या देगी ? जब मुझे ही नहीं मिलेगी तो तुम्हें कैसे खिला पाऊँगी ?''

पास में ही ललिता के ससुरजी नहा रहे थे । उन्होंने सारी बात सुन ली । ललिता घूँघट डाले थी अतः उसे अपने ससुरजी की उपस्थिति का जरा भी ख्याल नहीं था । ससुर को हुआ कि यह तो जुल्म है । नहाने के बाद जैसे ही वे घर पहुँचे, उन्होंने अपनी पत्नी

को डाँटा । पत्नी ने समझा कि बहुरानी ने ससुर से मेरी शिकायत कर दी है । वह और ज्यादा चिढ़ गयी । फिर तो उसने अपने बेटे के कान भरने भी शुरू कर दिये कि : 'यह तो डायन है... ऐसी है... वैसी है...' माँ की बात सुनकर अब तो ललिता का पति भी उससे डरने लगा । धीरे-धीरे ससुर भी अपनी पत्नी की बातों में ही आ गये और पहले तो केवल सास जुल्म करती थी किन्तु अब तो जुल्म करनेवाले तीन हो गये । ललिता एकदम अकेली पड़ गयी । माता-पिता की ओर से भी कोई सहयोग नहीं था । किन्तु ललिता भगवान शिव एवं माँ पार्वती को अपने माता-पिता मानती थी ।

जब उस पर जुल्म बढ़ते गये तो वह भगवान शिव एवं माता पार्वती के आगे आँसू बहाकर, अपनी व्यथा सुनाकर अपने दिल को कुछ हल्का कर लिया करती थी : 'प्रभु ! मैं जैसी-तैसी हूँ किन्तु तुम्हारी हूँ । तुम्हीं मेरे माता-पिता, सास-ससुर, बंधु-सखा सभी हो...' वास्तव में तो सभी के सब रिश्ते-नाते वे ही हैं किन्तु जो इस बात को मान लेते हैं उनका काम बन जाता है । फिर चाहे विवेक से मान लें या ललिता की तरह ठोकर खाकर मान लें लेकिन मानने में कल्याण निहित है ।

धीरे-धीरे भगवान गौरीशंकर में ललिता की प्रीति बढ़ती गयी । जब वह प्रीतिपूर्वक भजने लगी तो उसे शांति एवं आनंद भी मिलने लगा और **'जिय की जरनि'** चली जाने लगी । सासु का जुल्म अब उसके लिए वरदान बन गया । कभी-कभी कुटुंबियों की रोक-टोक भक्त के लिए वरदान का रूप भी ले लेती है । दुःख ही परम सुख के द्वार तक पहुँचने की सीढ़ी बन जाता है । इसलिये व्यवहार में चित्त की समता बनाये रखना बड़ा हितकर होता है ।

अब तो ललिता को भगवान के ध्यान-भजन एवं उनसे मन ही मन बात करने का चस्का-सा लग गया । ज्यों-ज्यों भगवद्-भजन में उसकी प्रीति बढ़ती गयी त्यों-त्यों उसकी सास का क्रोध भी बढ़ता गया । वह जमाना नहीं था तलाक लेने का... मैं तो कहता हूँ कि दुःख पड़ने पर तलाक लेने की जगह पर दुःखहारी श्रीहरि की शरण ले लेना हजारगुना अच्छा है । तलाक लेने के बाद दूसरा पति किया तो पता नहीं वह कैसा निकले ? फिर उसे भी तलाक दो, तीसरा करो... इससे तो अच्छा है विघ्न-बाधा आयें तो भगवान की शरण चले जायें और सुख-सुविधाएँ मिलें तो उसे भी भगवान की कृपा मानकर, भगवान को धन्यवाद देते हुए भगवान की शरण स्वीकार लें ।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥

'हे भारत ! सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही अनन्य शरण को प्राप्त हो । उस परमात्मा की कृपा से ही परम शान्ति को और सनातन परम धाम को प्राप्त होगा ।' (श्रीमद्भगवद्गीता : १८.६२)

"मेरी सासुजी जब मुझे भोजन देती है न, तब कटोरे में पत्थर रखकर फिर ऊपर भात रखकर देती है ताकि मेरे ससुर को लगे कि बहुत भात देती है ।"

भोग में शाश्वत् सुख, शाश्वत् आनंद, शाश्वत् मुक्ति और शाश्वत् जीवन नहीं है । भोगी का तो नश्वर जीवन है । देख-देखकर या तो आँख थक जायेगी या देखने की चीज बदल जायेगी या तो देखनेवाला थक जायेगा । चख-चखकर या तो जीभ थक जायेगी या तो वस्तु खत्म हो जायेगी या तो खाने की रुचि टूट जायेगी । इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों का भी समझना चाहिए । त्रिपुटी के मेल से, वस्तु, इन्द्रिय और मन की तदाकारता से जो सुख मिलता है वह सुखाभास है, हर्ष है । वह मनुष्य को बँधन में डालनेवाला है और परमात्मा का जो सुख है, वह स्वतःसिद्ध है और नित्य स्वभाव में जगानेवाला, मुक्त करनेवाला है ।

इधर सास की प्रताड़ना बढ़ती गयी और उधर ललिता का भगवद्भाव । एक दिन सास खूब क्रोधित हो गयी और ललिता के साथ बुरी तरह व्यवहार हुआ । अक्सर जितनी ज्यादा विघ्न-बाधाएँ आती हैं उतनी ही अधिक ईमानदारी से मनुष्य परमात्मा की

शरण में जाता है । क्योंकि उस समय परमात्मा के प्रति सर्वस्व समर्पण होता है, उस पर पूर्णतः श्रद्धा होती है । ललिता पहुँच गयी अपने माता-पिता के पास अर्थात् भगवान् शिव और माता पार्वती के चरणों में और आँसूओं की धारा बहाते हुए प्रार्थना करने लगी : ''हे मेरे प्रभु ! मेरा तो कोई नहीं है । पिता तो बचपन में ही गुजर गये । माँ गरीब है और सास भी ऐसी... मैं बिल्कुल अनाथ हूँ ।

इतने में अंदर से आवाज आयी : ''विश्व का नाथ जीवित है पगली ! तो तू अनाथ कैसे ?''

''हे नाथ ! मैं तुझसे कैसे मिलूँ ?''

''मैं तेरे से दूर ही नहीं हूँ तो फिर तू क्या मिलेगी ? केवल जगत् की लालसा छोड़ दे और मुझे पाने की लालसा बढ़ा दे । व्यवहार के संग का आग्रह छोड़ दे । तू जब पैदा हुई थी तब अकेली थी, जब मरेगी तब भी अकेली रहेगी और अभी-भी अकेली बैठी है । तू अकेली होकर शांत होती जा तो मैं तुझसे दूर नहीं और तू मुझसे दूर नहीं ।'' इस प्रकार अन्तर्यामी की प्रेरणा से उसके दुःखी जीवन को सहारा मिल गया ।

भक्तों के जीवन में कई बार इस प्रकार अन्तःप्रेरणा के अनेक शुद्ध भाव उत्पन्न होते हैं । ललिता को भी उसके अन्तर्यामी शिव प्रेरणा कर रहे थे कि : 'तू डर मत । चिन्ता मत कर । तू अनाथ नहीं है...'

एक रात्रि को उसी भाव में ललिता टाट का लिबास पहनकर घर से निकल पड़ी । स्त्री शरीर है अतः शरीर को देखकर किसीके मन में विकार न उठे इसलिए टाट का लिबास । चलती-चलती जहाँ सुबह में बाजार आया, वहीं एक कोने में ललिता बैठ गयी । ध्यान करते-करते कुछ योग्यता विकसित हो चुकी थी और भजन गाने की आदत पड़ चुकी थी । दो ठीकरे लेकर वह भजन गाने लगी और उसकी आवाज में ऐसा माधुर्य और आकर्षण आ गया था कि भजन सुनकर लोग उसके आगे कुछ डाल जाते और उसीसे वह अपना पेट भर लेती । वह गाती थी आत्मसंतोष के लिए लेकिन लोगों को संतोष मिलने लगा । ऐसा करते-करते ललिता में से लल्लेश्वरी देवी होकर भक्तों के हृदय में छा गयी । कहते हैं कि एक बार संत कबीर भी उसके दर्शन के लिए गये थे । यह आत्मदेव है ही ऐसा कि आप किसी भी भाव से उसके निकट जाओ, आपकी योग्यताओं को निखार देता है, महानता की यात्रा करा देता है ।

कहाँ तो एक अनाथ कन्या ललिता, जिसे खाने के लिए भरपेट चावल भी नहीं मिलते थे और अब उसके द्वारा सैकड़ों के पेट भरने लगे । आज भी उसके नाम की अनेक संस्थाएँ चल रही हैं ।

...तो ये दो बातें : एक तो भगवत्प्राप्ति की लालसा और दूसरी व्यवहार में असंगता । इन दोनों बातों को बढ़ाते जायें । यदि एक भी बढ़ायें तो दूसरी अपने-आप बढ़ेगी । यदि भगवत्प्राप्ति की लालसा को बढ़ायें तो व्यवहार में असंगता अपने-आप बढ़ने लगेगी और यदि व्यवहार में असंगता बढ़ाते जायेंगे तो भगवत्प्राप्ति की लालसा अपने-आप बढ़ने लगेगी । भगवान में, भगवत्प्राप्त महापुरुषों में श्रद्धा, भक्ति और प्रीति भगवत्प्राप्ति की लालसा और व्यवहार की असंगता को बढ़ाने में मदद करती है । अतः खोज लें किसी ऐसे महापुरुष को और आप भी लग जायें इन दोनों बातों में... भगवत्प्राप्ति की लालसा और व्यवहार में असंगता बढ़ाने में...

हरि ॐ... ॐ... शान्ति... शान्ति... शान्ति...

कुटुंबियों की रोक-टोक भक्त के लिए वरदान का रूप भी ले लेती है । दुःख ही परम सुख के द्वार तक पहुँचने की सीढ़ी बन जाता है । इसलिये व्यवहार में चित्त की समता बनाये रखना बड़ा हितकर होता है ।

आनंद के लिए बाहर क्यों व्यर्थ खोज करते हो ? सद्गुरु के चरणों के समीप जाओ और शाश्वत सुख का उपभोग करो । - स्वामी शिवानंदजी

सनातन धर्म
ज्ञान-प्रेम-माधुर्य का महासागर

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

दुनिया के हर प्राचीन धर्म ने, दुनिया के हर सुलझे हुए संप्रदाय और कई प्रबुद्ध महापुरुषों ने और राजा-महाराजाओं ने जिसका सहर्ष स्वीकार किया और अनुभूतियाँ की हैं, सारी पृथ्वी पर, अतल, वितल, महातल, रसातल, स्वर्गलोक, भूर्लोक, भूवर्लोक, जनलोक, तपलोक पर जिसका साम्राज्य छाया हुआ है वह सार्वभौम ब्रह्माण्डव्यापी धर्म है सनातन धर्म।

भिन्न-भिन्न देश, काल और परिस्थिति के अनुसार पृथक्-पृथक् धर्म बने हैं किन्तु सनातन धर्म सम्पूर्ण मानव जाति के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। सनातन सत्य रूपी धर्म जीवमात्र के भीतर, हर दिल में धड़कनें ले रहा है। सनातन सत्य हर दिल में छुपी हुई परमात्मा की वह सुषुप्त शक्ति है जिसके जागृत होने से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है, पूर्ण आत्मिक विकास होता है। जितने अंश में मानव सनातन सत्य के निकट होता है, उतने अंश में उसका जीवन मधुर होता है। जितने अंश में उसका सनातन सत्य से संबंध जुड़ता है, जितने अंश में अपनी सुषुप्त शक्तियाँ सनातन चेतना से प्राप्त करता है, उतने अंश में वह अपने-अपने क्षेत्र में उन्नत होता है। यह एक हकीकत है कि जितना-जितना मनुष्य देह को सत्य मानकर संकीर्ण कल्पनाएँ रचता है, उतना-उतना सच्चे सुख से दूर होता जाता है। आज का मनुष्य शरीर के भोगों में बड़े-बड़े सुख-सुविधा से संपन्न महलों में रहने में, भौतिक ऐश-आरामों में रचे-पचे रहने में ही सच्चा सुख मान बैठा है और उसे ही प्राप्त करने में अपना सारा समय बरबाद कर देता है। फलस्वरूप वह अपने आत्मा-परमात्मा के ज्ञान से वंचित् ही रह जाता है।

> *सनातन सत्य रूपी धर्म जीवमात्र के भीतर, हर दिल में धड़कनें ले रहा है। सनातन सत्य हर दिल में छुपी हुई परमात्मा की वह सुषुप्त शक्ति है जिसके जागृत होने से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है, पूर्ण आत्मिक विकास होता है।*

भागवत के प्रसंग में आता है कि रहुगण राजा, राज-पाट का सुख भोगते-भोगते विचार करते हैं : 'जिस देह को जला देना है, उस देह को आज तक तो बहुत भोगों में रमाया लेकिन ज्यों ही मृत्यु का एक झटका आएगा तो सब कुछ पराया हो जाएगा। मृत्यु आकर सब छीन ले उसके पहले उस सनातन शान्ति से मुलाकात कर लें तो अच्छा रहेगा।'

जहाँ में उसने बड़ी बात कर ली।
जिसने अपने दिलबर से मुलाकात कर ली॥

सनातन धर्म हमें अपने वास्तविक स्वरूप अर्थात् स्व-स्वरूप को प्रकट करने की आज्ञा देता है। हमारा आदि धर्म हमें सिखाता है कि पंचभूतों का बना शरीर 'हम' नहीं हैं। वास्तव में हम स्वयं ब्रह्म हैं, जो सृष्टि का कर्त्ता और धर्त्ता है। 'मैं और तुम'- ऐसे भेद हमने बनाये हैं। वास्तव में हम अभेद ब्रह्म हैं। सारा जगत ब्रह्मस्वरूप ही है। माया के पाश में बँधे हुए एक-दूसरे को हिन्दू, मुसलमान, सिख आदि मानते हैं और संकीर्ण विचारधाराओं में बहने लगते हैं। दुःख, अशान्ति, झगड़े, चिन्ता आदि में हम उलझते गये हैं, वरना सनातन धर्म **एकोहम् द्वितीयो नास्ति**। हम सभी एक हैं, भिन्न नहीं हैं... यह दिव्य सन्देश विश्व को दे रहा है और

यही तो सनातन सत्य भी है । इस सनातन सत्यरूपी व्यापक दृष्टिकोण का प्रभाव समाज पर जितने अंश में होता है, उतने ही अंश में स्नेह, आनंद, भाईचारा, दया, करुणा, अहिंसा आदि दैवी गुणों से समाज संपन्न होता है । इस सत्य के साथ अपना नाता जोड़ना ही व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जगत में प्रगति का मूलमंत्र है, मधुर जीवन की कुँजी है । फिर चाहे रमण महर्षि हों, साँई टेऊँराम हों, याज्ञवल्क्य हों चाहे रामावतार या कृष्णावतार हो चाहे कोई राजनैतिक जगत में सेवा करनेवाला हो ।

ऐसा नहीं कि उन्होंने जो पाया है, वह हम नहीं पा सकते । हममें भी वही योग्यता है । सिर्फ ठीक मार्गदर्शन से सही पथ पर लगने की आवश्यकता है । स्वामी रामतीर्थ अपने दिलबर से मुलाकात करके ऐसे छलके कि सनातन धर्म के अमृत को बाँटते-बाँटते वे अमेरिका पहुँचे । उस समय (सन् १८९९-१९०१) अमेरिका के राष्ट्रपति रूझवेल्ट ने स्वामी रामतीर्थ की उदारता को अखबारों द्वारा सुना और उससे वे इतने प्रभावति हुए कि स्वयं चलकर रामतीर्थ के दर्शन करने गये । अखबारवालों को स्वामी रामतीर्थ के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा था :

''मैंने आज तक सुना था कि जीसस सनातन सत्य के अमृत को पाये हुए थे लेकिन भारत के इस साधु को तो अमृत बाँटते हुए देखा । मेरा जीवन सफल हो गया ।''

आज हम अपने जीवन में सनातन सत्य के अमृत को पाने की आकांक्षा नहीं रखते इसलिए हम सुविधाओं के बीच पैदा होते हैं, पलते हैं फिर भी जिंदगी भर परेशान ही रहते हैं और आखिर मर जाते हैं, जीवन व्यर्थ गँवा देते हैं ।

संत-महापुरुष, सत्यस्वरूप ईश्वर के साथ अपना सनातन संबंध जोड़े हुए होते हैं जिससे वे लेशमात्र भी विघ्न-बाधाओं में बहते नहीं हैं । वे निराश या हताश बिल्कुल नहीं होते वरन् मुसीबतें उनके जीवन को चमकाने, प्रसिद्धि दिलाने एवं पूजनीय बनने का कारण बन जाती हैं ।

धन, सौन्दर्य से हम सुंदर नहीं होते वरन् सुंदर से भी सुंदर आत्मस्वरूप के करीब पहुँचने पर हम सुंदर होते हैं । जितने हम भीतर के धन से खोखले या कंगाल होते हैं उतनी बाह्य भोग-पदार्थों की गुलामी करनी पड़ती है क्योंकि सुख इन्सान की जरूरत है । जब तक हमें आत्मिक आनंद नहीं मिलता तब तक हम विषय-वासना में सुख ढूँढते हैं किन्तु दुःख-परेशानी के अलावा कुछ हाथ नहीं लगता । इससे विपरीत, जितने हम भीतर के धन से संपन्न होते हैं, आत्मसुख से तृप्त होते हैं उतना हम बाह्य भोग-पदार्थों की ओर से बेपरवाह होते हैं ।

अष्टावक्र के शरीर में आठ कमियाँ थीं । छोटा कद, टेढ़ी टाँगें थीं और उम्र १२ वर्ष थी । फिर भी संसार से विरक्त होकर सरकनेवाली चीजों से, देह और मन के निर्णयों, आकर्षणों से पार होकर मुक्तिपद प्राप्त किये हुए थे तो राजा जनक उनके चरणों में प्रणाम करके उनके आगे प्रश्न करते हैं : ''भगवन् ! आत्मसुख कैसे प्राप्त होता है ?''

सनातन सत्य के सुख को पाने की चाह हर मनुष्य में होती है परन्तु सच्ची दिशा न मिलने पर वह संसारसुख में भटक जाता है । मिथ्या जगत् के नश्वर सुख में सत्यबुद्धि करके हम क्षणिक सुख प्राप्त करने में लगे रहते हैं फिर चाहे कितने ही विघ्न क्यों न आएँ ? पैसे कमाने के लिए न जाने क्या-क्या करना पड़ता है ? यदि धन बहुत हो तो शरीर में रोग घुसा होता है, किसीके घर में पुत्र नहीं है तो किसीके माँ-बाप अकस्मात् चल बसते हैं । जीवन है तो कुछ न कुछ आफतें आती ही रहती हैं । अरे ! भगवान स्वयं जब श्रीरामचन्द्रजी तथा श्रीकृष्ण के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए तब उन्हें भी विघ्न-बाधाएँ आयी थीं किन्तु फर्क है तो इतना कि हम जब विघ्न-बाधाएँ आती हैं तो उनमें बहकर हताश-निराश हो जाते हैं जबकि संत-महापुरुष, सत्य-स्वरूप ईश्वर के साथ अपना सनातन संबंध जोड़े हुए

(शेष पृष्ठ १५ पर)

गीता के कुप्रचार से सावधान !

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणीस्वरूप गीता की महिमा अद्भुत है । तभी तो कहा गया है :

हरि सम जग कछु वस्तु नहीं, प्रेम पंथ सम पंथ ।
सद्गुरु सम सज्जन नहीं, गीता सम नहीं ग्रंथ ॥

फिर भी कुछ लोग ऐसे पैदा हो गये हैं जो गीता की निंदा करते हैं। वे लोग परदेश की एजेन्सियों द्वारा खरीदे गये हैं। इसलिए धर्म-संस्था के नाम पर, धर्म-संस्था का बोर्ड लगाकर गीता, रामायण, उपनिषद् एवं वैदिक ज्ञान के बारे में कुप्रचार करते हैं ।

गीता की तो बड़ी भारी महिमा है ।

जब देश को आजाद कराने के लिए भारतीय वीर जूझ रहे थे उस समय उन स्वतंत्रता-संग्राम के साहसी सेनानियों को ब्रिटिश सरकार पकड़ लेती थी और खुले आम फाँसी पर चढ़ा देती थी ताकि दूसरे लोग घबरा जायें। किन्तु फाँसी पर लटकनेवाले, भारत के वे लाल तो...

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

'इस आत्मा को शस्त्रादि काट नहीं सकते, इसको आग जला नहीं सकती, इसको जल गीला नहीं कर सकता और वायु इसको सूखा नहीं सकती ।'

(श्रीमद्भगवद्गीता : २.२३)

इस श्लोक को आत्मसात् करके 'भारत माता की जय' के नारे लगाते हुए वे वीर हँसते-हँसते फाँसी के फँदे पर झूल जाते थे । कितनी-कितनी कुर्बानियों के पश्चात् देश को आजादी मिली है और आज... देश को गिरवी रखते जा रहे हैं, कंगाल बनाते जा रहे हैं ।

ब्रिटिशरों (अंग्रेजों) को आश्चर्य होता था कि इतने-इतने जवान फाँसी पर चढ़ाये जा रहे हैं फिर भी दूसरे कहाँ से उभरते जा रहे हैं ! इनका मनोबल क्यों बुलंद होता जा रहा है ? पूछताछ करने पर पता चला कि भारत के इन वीरों के पास गीता है, और गीता का ज्ञान ऐसा है जो इनका मनोबल क्षीण नहीं होने देता । **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।** चिन्तन करते करते ये हँसते हँसते फाँसी के फँदे पर झूल जाते हैं साथ ही दूसरों में भी अधिक उत्साह जगाते जाते हैं ।

ब्रिटिशरों को आश्चर्य होता था कि इतने-इतने जवान फाँसी पर चढ़ाये जा रहे हैं फिर भी दूसरे कहाँ से उभरते जा रहे हैं ! इनका मनोबल क्यों बुलंद होता जा रहा है ? पूछताछ करने पर पता चला कि भारत के इन वीरों के पास गीता है, और गीता का ज्ञान ऐसा है जो इनका मनोबल क्षीण नहीं होने देता ।

ब्रिटिश शासन ने अपने अमलदारों को हुक्म दिया कि जल्दी से जल्दी गीता लिखनेवाले को गिरफ्तार कर लिया जाये और गीता जब्त कर ली जाये । अब गीता लिखनेवाले को कैसे गिरफ्तार करते ? भगवान श्रीकृष्ण को कहाँ पकड़ते और गीता...? गीता को घर-घर जाकर कैसे जब्त करते ? भारतवासियों की तो प्राण है गीता । भारत को आजाद कराने में केवल महात्मा गांधी आदि का ही सहयोग नहीं रहा वरन् मुख्य सहयोग रहा है गीताज्ञान का । गांधीजी भी गीता माता की सहाय लेते थे ।

दुःख के साथ कहना पड़ता है कि ऐसे संप्रदाय हमारे देश में चल रहे हैं जिन्हें विदेशी कम्पनियों ने भीतर से खरीद लिया है । वे लोग बोलते हैं कि :

'गीता सच्ची नहीं है ।' उन्हें हम सावधान करते हैं कि गीता के विषय में कुप्रचार करने का अपना रूख छोड़ दो नहीं तो भारतवासी जागेंगे तो आपके संप्रदायवालों के लिए बड़ी मुसीबत पैदा हो जायेगी । हमारे भारत को खोखला करनेवाले संप्रदायों को हम सावधान करते हैं ।

भारत को आजाद कराने में केवल महात्मा गांधी आदि का ही सहयोग नहीं रहा वरन् मुख्य सहयोग रहा है गीताज्ञान का । गांधीजी भी गीता माता का सहारा लेते थे ।

यदि संप्रदाय चलाना ही है तो जिससे देश की उन्नति हो ऐसी बातें करके चलाओ । लोगों को डराकर, कमजोर करके, गुमराह करके अपना संप्रदाय कब तक चलाओगे ? श्यामा चिड़िया के काजल से या तांत्रिक बल से संप्रदाय कितने दिन टिकेगा ? स्वामी विवेकानंद बोलते थे :

''भारत देश में कई संप्रदाय पैदा हुए और कई नष्ट हो गये लेकिन जो मानव जाति का कल्याण चाहती है वह अद्वैत की परंपरा, सनातन परंपरा अभी तक चली आ रही है ।''

उन्हें हम सावधान करते हैं कि गीता के विषय में कुप्रचार करने का अपना रूख छोड़ दो नहीं तो भारतवासी जागेंगे तो आपके संप्रदायवालों के लिए बड़ी मुसीबत पैदा हो जायेगी ।

किसी मत, पंथ, धर्म या संप्रदाय से हमारा कोई विरोध नहीं है लेकिन हमारी प्रार्थना तो जरूर है कि सत्य की शरण लो । सबकी भलाई में आपकी भलाई है, देश की भलाई में आपकी भलाई है । विदेशियों से पैसे लेकर, जो दूसरों को हथियार देकर लड़ा-मराकर सबको दबाना चाहते हैं वे आपको शांतिदूत होने का प्रमाणपत्र देते हैं और आप उसे लेकर घूम रहे हैं । बड़ी शर्म की बात है । लड़ानेवाले ही शांतिदूत का प्रमाणपत्र दे रहे हैं ! हद हो गयी !

यदि संप्रदाय चलाना ही है तो जिनसे देश की उन्नति हो ऐसी बातें करके चलाओ । श्यामा चिड़िया के काजल से या तांत्रिक बल से संप्रदाय कितने दिन टिकेगा ?

मैं तो हनुमानप्रसाद पोद्दारजी को धन्यवाद दूँगा । कोई बड़ा प्रसिद्ध विद्वान था और साधु भी था । वह जिस किसीको भी प्रमाणपत्र दे देता था । उसने हनुमानप्रसादजी को भी भक्तराज का प्रमाणपत्र दिया । हनुमानप्रसाद पोद्दारजी ने उनका प्रमाणपत्र उन्हीं के पास रख दिया और बोले :

''मैं भक्त हूँ कि नहीं, इसे भगवान जानता है और मेरा मन जानता है । मुझमें कितने दोष हैं वह मैं जानता हूँ । 'भक्तराज' का प्रमाणपत्र देकर मुझे नहीं ठगा जा सकता और जनता को ठगने का मेरा विचार नहीं है ।''

स्वामी रामतीर्थ जब विदेश गये तब अमेरिका के प्रेसिडेन्ट मि. रूजवेल्ट जैसे बड़े-बड़े लोग उनके श्रीचरणों में नतमस्तक होकर अपना भाग्य बनाते थे । तीन साल के बाद जब स्वामी रामतीर्थ स्वदेश लौटे तब शिक्षा संस्थाओं, सामाजिक संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओ आदि ने खूब प्रमाणपत्र दिये । जब रामतीर्थ स्टीमर पर चढ़े तब उन सब प्रमाणपत्रों के बंडलों को देखकर पूछा : ''यह क्या है ?''

बंडल रखनेवाले व्यक्ति ने कहा : ''स्वामीजी ! ये आपके प्रमाणपत्रों के बंडल हैं । इन्हें भारत ले जायेंगे ।''

रामतीर्थ ने वे बंडल उठाकर समुद्र में फेंक दिये और नाचने लगे : ''राम ! तेरे से तो सारा विश्व प्रमाणित हो रहा है । तू ये प्रमाणपत्र लेकर कहाँ तक घूमता रहेगा ?''

यह है सत्य का अनुभव ! यह है आनंददायी अनुभव... सुखदायी अनुभव ! किसीके इनकार करने पर अनुभव चला थोड़े ही जाता है !

(शेष पृष्ठ १५ पर)

पूर्ण जीवन के तीन सूत्र : प्रशान्ति-निर्भयता-ब्रह्मचर्यव्रत

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

नानकजी ने कहा है :

पूरा प्रभु आराधिया पूरा जा का नाँव ।
नानक पूरा पाइया, पूरे के गुन गाँव ॥

जब तक पूरे प्रभु का ज्ञान नहीं मिलता, पूरे प्रभु की आराधना नहीं होती, 'पूरे प्रभु के साथ अपना नित्य संबंध है' ऐसा अनुभव नहीं होता तब तक अपूर्ण प्रकृति में, अपूर्ण परिस्थिति में, अपूर्ण वस्तुओं में, अपूर्ण देश में, अपूर्ण काल में जीव बेचारा अपूर्ण-सा ही रह जाता है ।

कितनी ऊँची बात कह दी है नानकजी ने !

पूरा प्रभु आराधिया...

कोई मुहल्ले का नेता होता है तो कोई गाँव का होता है, कोई तहसील का नेता होता है तो कोई जिले का नेता होता है, कोई प्रांत का नेता होता है तो कोई देश भर का नेता होता है लेकिन जो अनंत ब्रह्माण्डों का आधार है उसको आराधें तो अनंत ब्रह्माण्डनायक का सुख मिल जायेगा, कल्याण हो जायेगा । यह सत्य है कि आप यदि पूरे के गुण गायेंगे तो पूरे का ज्ञान पायेंगे । पूरे का चिंतन करेंगे तो हमारा मन भी पूर्ण सुखी, आनंदित होगा और पूर्ण उपलब्धि करेगा ।

घटाकाश महाकाश से अभिन्न है, बिन्दु सिन्धु से अभिन्न है, लहर सागर से अभिन्न है ऐसे ही जीवात्मा परब्रह्म परमात्मा से अभिन्न है । उस परब्रह्म परमात्मा की जो आराधना करता है, ज्ञान पाकर चिंतन-मनन करता है, वह उसीमय हो जाता है ।

आप ध्यान रखें कि जब प्रकृति पूर्ण नहीं है तो प्रकृति की चीजें पूर्ण सुख कैसे दे सकती हैं ? प्रकृति में जो प्राप्त किया है वह पूर्ण कैसे हो सकता है ? प्रधानमंत्री का पद मिल जाये चाहे राष्ट्रपति हो जायें फिर भी भय तो बना ही रहता है । अरे ! चाहे इन्द्र का पद मिल जाये फिर भी खटका तो बना ही रहेगा क्योंकि ये सब छूटनेवाले हैं, अपूर्ण हैं ।

पूरे की आराधना करनी हो तो क्या करना चाहिए ? किस तरीके से आम आदमी उस पूरे प्रभु की आराधना करे ? इसके लिये भगवान कहते हैं :

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थित: ।
मन: संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्पर: ॥

'जिसका अंत:करण शान्त है, जो भयरहित है और जो ब्रह्मचर्यव्रत में स्थित है, ऐसा सावधान योगी मन का संयम करके, मुझमें चित्त लगाता हुआ, मेरे परायण होकर स्थित होवे ।' (गीता : ६.१४)

भगवान् जब 'मेरे परायण हो' या 'मुझे पा ले'- ऐसा बोलते हैं तब यह नहीं समझना चाहिए कि अर्जुन के रथ पर बैठे हुए श्रीकृष्ण को पा लें । उन श्रीकृष्ण को तो शकुनि और दुर्योधन ने कई बार देखा था लेकिन इससे क्या ? 'मुझको पा ले' का तात्पर्य यह समझना चाहिए कि जहाँ से तुम्हारा 'मैं' उठता है उसमें विश्रान्ति पाने का, उसको अपना स्वरूप जानने का इशारा भगवान् कर रहे हैं । वही पूर्ण है ।

जैसे घटाकाश महाकाश से अभिन्न है, बिन्दु सिन्धु से अभिन्न है, लहर सागर से अभिन्न है ऐसे ही जीवात्मा परब्रह्म परमात्मा से अभिन्न है । उस परब्रह्म परमात्मा की जो आराधना करता है, ज्ञान पाकर चिंतन-मनन करता है, वह उसीमय हो जाता है । उसी पूर्ण में पूर्णाकार हो जाता है ।

यहाँ पर तीन बातें आयी हैं : **प्रशान्तात्मा ।**

विगत भीः । ब्रह्मचारिव्रते स्थितः । अर्थात् प्रशान्ति, निर्भयता और ब्रह्मचर्यव्रत । इस प्रकार बुद्धि, मन और शरीर को ध्यान के योग्य, पूरे प्रभु को पाने के योग्य बनाने की व्यवस्था का वर्णन किया है भगवान ने ।

अशान्ति क्यों होती है ? राग-द्वेष से । राग-द्वेष मिटने पर शांति स्वतः प्रगट होने लगती है । अरे ! प्रगट क्या होगी ? आपका मूल स्वरूप शांति ही तो है । राग-द्वेष होता क्यों है ? जगत् की वस्तुओं से सुख लेने की बेवकूफी से । राग-द्वेष से अन्तःकरण मलिन होता है और मलिन अंतःकरण में अशान्ति होती है । राग-द्वेष जितना कम होता जायेगा, उतना अंतःकरण शुद्ध होता जायेगा और जितनी राग-द्वेष कम, जितना अंतःकरण शुद्ध, उतना वह प्रशान्तचित्त होता जायेगा और जितनी शांति उतना सामर्थ्य, उतनी योग्यताएँ निखरती जायेंगी ।

दूसरी बात है ब्रह्मचर्यव्रत में स्थिति । ब्रह्मचारी का अर्थ यह नहीं कि जो लंगोटी लगाकर बैठा है या जिसने शादी नहीं की है । ऐसे अविवाहित तो कई होते हैं किन्तु सच्चा ब्रह्मचारी तो कोई विरला ही होता है । ब्रह्मचारी का व्रत क्या है ? पाँच विषयों से आकर्षित न होकर, अपने गुरुकुल में विद्याध्ययन करने के लिए तीन गुण और भी ले आता है- मान, बड़ाई और शरीर के आराम से अपने को बचाना ।

ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित होनेवाले व्यक्ति को पूरे प्रभु को पाने में सुगमता होती है और पूरे प्रभु को पाने के बाद अपूर्ण वस्तु का कोई आकर्षण या कोई भय नहीं रहता है ।

ब्रह्मचारी देखता तो है लेकिन फिल्म आदि देखकर विषयों का मजा नहीं लेता बल्कि अपनी पुस्तकों को पढ़ता है, अपने सेवाकार्य को देखता है । सुनता है तो ज्ञान पाने के विषयों को ही सुनता है, फालतू का नहीं सुनता । खाता है तो शरीर को क्रियाशील रखने के लिए, ऐश करने के लिए गुरुकुल में नहीं खाता । सूँघता है तो भगवान का प्रसाद-फूल सूँघता है, परफ्यूम आदि के चक्कर में नहीं पड़ता ।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध- ये पाँच विषय हैं । इनमें ब्रह्मचारी फँसता नहीं है अपितु पाँचों इन्द्रियों को संयत करके अपने को विद्याध्ययन के योग्य बनाता है । गुरुकुल में वह मान की इच्छा भी नहीं रखता, बड़ाई की इच्छा भी नहीं रखता और आराम-पसंदगी भी नहीं रखता तभी वह ब्रह्मचारी कहलाता है । जो पूरे प्रभु को पाना चाहता है उसे भी ब्रह्मचर्य के व्रत में स्थित होना चाहिए ।

ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित होनेवाले व्यक्ति को पूरे प्रभु को पाने में सुगमता होती है और पूरे प्रभु को पाने के बाद अपूर्ण वस्तु का कोई आकर्षण या कोई भय नहीं रहता है ।

कभी न छूटे पिण्ड दुःखों से ।
जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं ॥

जब तक पूरे की आराधना नहीं की तब तक चाहे कैसा भी शरीर बन जाये लेकिन कोई-न-कोई दुःख, मुसीबत और मौत तो पीछे लगी ही रहेगी । साधक को चाहिए कि प्रभु की आराधना करते वक्त, ध्यान, भजन करते वक्त मन इधर-उधर चला जाये, भूतकाल की घटना या भविष्य की कल्पना में चला जाये तो उस समय ऊँचे स्वर से भगवान् का नामोच्चारण शुरू कर दे अथवा गहरे श्वासोच्छ्वास ले और मन से कहे : 'ऐ मेरे मन ! भूतकाल तो बीत गया, अब वह वापस आनेवाला नहीं है । उसका क्या चिंतन करता है ? भविष्य भी अपने सामने नहीं है तो भविष्य की कल्पना क्या करना ? अभी तो वर्त्तमान में अपना काम कर । जैसे- विद्यार्थी वर्त्तमान की (जिसकी परीक्षा देनी है उसकी) पुस्तकें पढ़ता है ऐसे ही अभी तो हमें परमात्मा को पाने के लिए ध्यान करना है, परमात्मशांति में शांत होना है । परमात्मा के माधुर्य में मधुर होना है । क्यों तू इधर-उधर जाता है ? रे मन !'

थोड़ी देर मन शांत हो न हो, फिर इधर-उधर भटकेगा । पुनः उसे नाम-जप में लगाने का प्रयास करें । जैसे विद्यार्थी का मन इधर-उधर जाता है फिर भी वह उसे प्रयत्नपूर्वक पाठ्य-पुस्तकों में लगाता है वैसे ही भगवद्-ध्यान, भगवद्-भजन के समय मन

इधर-उधर जाये तो उसे भी प्रयत्नपूर्वक परमात्मा में लगाना चाहिए । बार-बार अनात्मा से हटाकर मन को आत्मा में लगाना चाहिए । यदि मन भूत-भविष्य में जाता हो तो ध्यान-योग का अभ्यास करनेवाले साधकों को सावधान रहना चाहिए ।

मन पर निगरानी रखने के साथ ही साथ व्यवहार पर नियंत्रण होना भी अति आवश्यक है । कई लोग ध्यान-भजन तो करते हैं किन्तु जो आया सो खा लिया, जो आया सो बोल दिया, जैसा जी में आया वैसा कर लिया... नहीं, अपने ध्यान-भजन के समय का ख्याल करके व्यवहार करना चाहिए और व्यवहार काल में भी चित्त अशुद्ध न हो इसका ध्यान रखना चाहिए । जो इस प्रकार व्यवहार काल में भी अपने चित्त की शुद्धि का ख्याल रखता है उसका चित्त भगवान में जल्दी लगता है । शरीर एवं वस्तुओं को 'मैं-मेरा' मानने से भय होता है कि 'वस्तुएँ चली न जायें... मेरी इज्जत चली न जाये... नाम बिगड़ न जाये...' लेकिन ये शरीररूपी बुलबुले तो हजारों-लाखों बार मिले और मिट गये । इनका भय न रखें । 'जो हो गया देख लिया, जो हो रहा है देख रहे हैं और जो होगा देखा जायेगा... ऐ मेरे मन ! अभी तो तू भगवान् के चिंतन में लग ।' इस प्रकार भगवान् के चिंतन में लगने से अंतःकरण चैतन्य के आनंद से, चैतन्य के माधुर्य से, चैतन्य के ज्ञान से और चैतन्य की शांति से सराबोर हो उठेगा ।

अपने परम सौंदर्य परमात्मस्वरूप को पाने के लिये शांत बनो । ब्रह्मचर्य का आश्रय लेकर परम निर्भय बनो । परमात्म-प्राप्ति की बाजी तुम्हारे हाथ में है ।

दो प्रकार की माताएँ होती हैं : एक निषेधयुक्ति से समझाती है और दूसरी विधियुक्ति से समझाती है । बालक खिलौने का आम चूसता है तो एक माँ उस खिलौने का आम छुड़ाने के लिये डाँटती है । डाँट से डरकर बालक आम तो छोड़ देता है लेकिन मन से आम का आकर्षण नहीं छूटता । जैसे ही माँ चली जाती है, बालक धीरे-से खिलौने का आम चूसने लग जाता है । दूसरी माँ असली आम को धोकर उसका थोड़ा-सा रस उसे चटा देती है, आम चूसने के लिए दे देती है । जब बालक को असली आम का स्वाद आ जाता है तो वह खिलौने का आम अपने-आप छोड़ देता है ।

'यह नहीं करो... वह नहीं करो... ऐसा करोगे तो पाप होगा... नरकों में जाओगे...' ऐसा करके समझाने... की रीति है निषेध युक्ति । कोई महापुरुष मिल जायें और ध्यान-भजन कराते-कराते, भगवद्रस का स्वाद चखा दें तो हमारा मनरूपी बच्चा भगवान के स्वाद में लग जाता है । यह है विधि युक्ति । जब असली आम का स्वाद आ जाये तो खिलौने के आम को कोई कब तक चाटेगा ? ऐसे ही जब ध्यान-भजन करके असली भक्ति का सुख मिल गया तो फिर विकारी सुखों में मन जायेगा नहीं... और कभी-कभार पुरानी आदत से गया भी तो सावधान हो जायेगा ।

सुंदर सद्गुरु है सही, सुंदर शिक्षा दीन्ह ।
सुंदर वचन सुनाय के, सुंदर सुंदर कीन्ह ॥

सद्गुरु का जो अनुभव है वह सुन्दर है । सत्य-स्वरूप ईश्वर का अनुभव करनेवाले जो महापुरुष हैं, उनके वचन सुन्दर हैं ।

अतः अपने परम सौंदर्य परमात्मस्वरूप को पाने के लिये शांत बनो । ब्रह्मचर्य का आश्रय लेकर परम निर्भय बनो । परमात्म-प्राप्ति की बाजी तुम्हारे हाथ में है ।

दृढ़ता से चलो । लड़खड़ाते दीन-हीन होकर मजदूर की नाईं संसार का बोझा नहीं उठाओ वरन् अपने आत्मवैभव को पाओ ।

❀

शिष्य के हृदय के तमाम दुर्गुणरूपी रोग पर गुरुकृपा सबसे अधिक असरकारक प्रतिरोधक एवं सार्वत्रिक औषध है ।
- स्वामी शिवानंदजी

शब्द की चोट

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

जैसे समुद्र की एक लहर पूरे समुद्र की खबर देती है, सूर्य की एक किरण सूर्य की खबर देती है, ऐसे ही अनजाने में परमात्मा की एक तरंग मिलती है, उस एक क्षण की तरंग का सुख संसार के सब भोगों को तुच्छ बना देता है ।

संत इब्राहीम से किसीने पूछा : ''आपने अपना राज-पाट क्यों छोड़ दिया ? बिल्ख का इतना बड़ा साम्राज्य छोड़कर, भारत में संन्यासी बनकर, दर-दर की ठोकरें क्यों खा रहे हो ?''

तब इब्राहीम ने कहा : ''एक दिन मैंने अचानक आइने (दर्पण) में देखा कि मेरे महल की जगह पर कब्रिस्तान है और उस कब्रिस्तान में मैं अकेला हूँ । पाप-ताप करके जिन्हें रिझाने में मैं लगा था उसमें से कोई भी मेरे साथ नहीं है । जिन बेगमों-बच्चों को रिझाने में और वजीर-मंत्रियों को मनाने में मैंने अपना कीमती समय लगाया, उनमें से कोई भी मेरे साथ नहीं है । कब्रिस्तान के भयानक वातावरण में मैं अकेला ही दुःख का भागी हूँ और मिट्टी में मिलने जा रहा हूँ... ऐसा मुझे अहसास हुआ ।

इसी प्रकार एक अन्य रात्रि में मुझे अहसास हुआ कि मेरे महल की छत पर कोई घूम रहा है । मैंने पूछा : 'कौन है ?' तब आवाज आयी : 'मैं हूँ ।'

मैंने पुनः पूछा : 'मैं कौन ? और छत पर क्या कर रहे हो ?' आवाज : 'मैं अपना खोया हुआ ऊँट खोज रहा हूँ ।' मैंने डाँटा : 'मूर्ख कहीं के ! सम्राट के महल की छत पर कभी ऊँट मिल सकता है ?'

तब आवाज आयी : 'इब्राहीम ! कान खोलकर सुन ले । अगर राज्य के इन नश्वर भोगों में सुख टिक सकता है, बेगमों के शरीरों में सुख टिक सकता है, सिंहासन पर बैठकर, अहंकार सजाकर यदि सुख रह सकता है, सुंदर रथों में घूमने से यदि सुख हमेशा टिक सकता है तो छत पर ऊँट भी टिक सकता है ।' यह बात सुनकर मेरा वैराग्य और भी ज्यादा बढ़ गया । मैं राज-पाट छोड़कर भारत आया एवं यहाँ आकर मैंने संन्यास ले लिया ।''

उस गैबी आवाज के दो-चार शब्द सुने इब्राहीम ने, लग गई चोट और चल पड़े परमात्म-पथ पर तो फिर पाकर ही रहे । काश, हमें भी चोट लग जाये किसी संत-महापुरुष के दिव्य शब्दों की और हम भी चल पड़ें तो हमारा भी काम बन सकता है ।

❀

श्रद्धा के सहारे मुक्ति

धन, सत्ता, लावण्य, स्त्री इत्यादि में श्रद्धा तो हरेक कर सकता है परन्तु ईश्वर और ईश्वर के तत्त्व का साक्षात्कार किये हुए सद्गुरु के प्रति श्रद्धा तो कुछ निराली ही बात है । नश्वर में श्रद्धा अन्ततोगत्वा सब कुछ छोड़ने पर मजबूर कर देती है, हम न चाहें तो भी छोड़ना ही पड़ता है, कंगाल होना ही पड़ता है परन्तु शाश्वत में की गयी श्रद्धा तमाम बँधनों से पार ले जानेवाली है । शाश्वत में दृढ़ श्रद्धा तो शहनशाह बनाती है । जिसके जीवन में भगवान एवं सद्गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा नहीं, उसका जीवन तो खोखला है, कंगला है । सद्गुरु का सान्निध्य ही परम श्रद्धा की जन्मस्थली है । सद्गुरु में श्रद्धा के बाद कुछ भी बाकी नहीं रहता । मुक्ति तो स्वाभाविक प्राप्त होती है ।

भगवान बुद्ध से उनके शिष्य आनंद ने पूछा : ''आप तो दिन-रात मोक्ष बाँट रहे हैं लेकिन लोगों को मोक्ष का अनुभव क्यों नहीं होता ?''

बुद्ध बोले : ''जाओ, नगर में जाकर लोगों से पूछो कि उन्हें क्या चाहिए ? उनका नाम और उनकी आवश्यकताएँ लिखकर ले आओ ।''

आनंद दिनभर शहर में घूमा । उसने पाया कि किसीको बेटा चाहिए तो किसीको बेटे की तालीम, किसीको पत्नी चाहिए तो किसीको तलाक, किसीको

सेठ की प्रसन्नता चाहिए तो किसीको वफादार नौकर, किसीको कपड़े-गहने चाहिए तो किसीको रथ-गाडियाँ... इस प्रकार सारे शहर में एक भी ऐसा नहीं, जिसे मोक्ष चाहिए ।

बुद्ध कहते हैं : ''बस, आनंद ! लोगों को मोक्ष की इच्छा नहीं है, इसलिये मोक्ष नहीं होता । अन्यथा, मोक्ष तो सहज है, सरल है ।''

जब तक सद्गुरु में श्रद्धा नहीं होती, तब तक जीवन में मुक्ति का महत्त्व भी समझ में नहीं आता । सद्गुरु के पास जो जैसा चाहता है, देर-सबेर उसे वही प्राप्त होता है । जो सचमुच श्रद्धा के सहारे मुक्ति चाहता है, उसे मुक्ति मिलती है लेकिन जो संसार का उल्लू सीधा करना चाहता है, उसका छोटा-मोटा उल्लू सीधा भी हो जाता है किन्तु अन्त में हाथ कुछ नहीं लगता ।

बड़े धनभागी तो वे हैं जो सद्गुरु से श्रद्धा और ईश्वरीय प्रेम चाहते हैं, सद्गुरु का अनुभव अपना अनुभव बनाना चाहते हैं और वास्तव में मुक्त होना चाहते हैं । धन्य हैं उनके माता-पिता, उनका कुल गोत्र और समग्र धरती याता...

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥

(पृष्ठ ८ का शेष)

होते हैं जिससे वे लेशमात्र भी विघ्न-बाधाओं में बहते नहीं हैं । वे निराश या हताश बिल्कुल नहीं होते वरन् मुसीबतें उनके जीवन को चमकाने, प्रसिद्धि दिलाने एवं पूजनीय बनने का कारण बन जाती हैं । भगवान श्रीरामचन्द्रजी को १४ साल का वनवास मिला था । भगवान श्रीकृष्ण का जन्म ही काल-कोठरी में हुआ था । महीने भर के थे कि पूतना जहर पिलाने आ गयी थी । कंस मामा ने लगातार कई षड़यंत्र रचे । फिर भी श्रीकृष्ण और रामजी सदैव अपने सनातन सत्य स्वरूप में प्रतिष्ठित रहे, मुस्कुराते रहे ।

यही तो है जीव को अपने आत्मस्वरूप में जगाने का सनातन धर्म का उद्देश्य ।

(पृष्ठ १० का शेष)

किसीके कुप्रचार करने पर भी गीता की महत्ता कम थोड़े ही हो जाती है ! गीता का ज्ञान तो हजारों वर्षों से भारतवासियों को जगाता आया है, जगा रहा है और जगाता रहेगा...

गीता, भागवत, उपनिषदों का कुप्रचार करनेवाले स्वार्थी लोगों से समझदार लोग सावधान रहें और देश को खोखला करनेवाली उनकी चेष्टा से स्वयं भी सावधान रहें व औरों को भी सावधान करें ।

मैंने सुना है कि ऐसे कुप्रचार का शिकार बना हुआ पढ़ा-लिखा व्यक्ति एक महात्मा के पास आया और कहने लगा : ''रामायण सच्ची है कि गलत है ?''

महात्मा ने कहा : ''मेरे सामने रामायण लिखा नहीं गया था । मैं कैसे कहूँ सही है कि गलत ? लेकिन रामायण पढ़ने से हमारा जीवन सही हो गया और लाखों लोगों का जीवन सही हो रहा है ।''

रामायण से सामाजिक और धार्मिक जीवन उन्नत तो होता ही है । साथ-साथ में आत्मिक उन्नति भी होती है । ऐसे ही गीता का, भागवत का, उपनिषदों का श्रोता आध्यात्मिक उन्नति खूब करता है । आध्यात्मिक प्रभाव से सामाजिक व धार्मिक जीवन में वह शोभा पाता है । मन की शांति, चित्त की समता, इन्द्रियों का संयम इन सद्ग्रंथों, सत्शास्त्रों की ही देन है । जितने अंश में जो पचा लेता है उतना ही वह सुखी हो जाता है ।

उपहार योजना का लाभ लें

अपने परिचित एवं अन्य लोगों तक पूज्यश्री के सत्संग एवं मार्गदर्शन का लाभ 'ऋषि प्रसाद' द्वारा पहुँचाने हेतु सभी सेवाधारी भाइयों को इस माह से उनके द्वारा बनाये गये १० वार्षिक सदस्यों पर अथवा १ आजीवन सदस्य पर १ वार्षिक सदस्यता उपहार दी जायेगी ।

सेवाधारियों के अलावा कोई भी व्यक्ति १० सदस्यों का वार्षिक शुल्क अथवा आजीवन शुल्क के रू. ५०० एक साथ ड्राफ्ट अथवा M. O. से भेजकर इस उपहार योजना का लाभ ले सकता है । सभी सदस्यों का नाम एवं डाक का पूरा पता सादे कागज पर शुल्क साथ ही भेजें ।

पूर्व में घोषित अन्य सभी उपहार योजनाएँ इस माह से निरस्त की जाती हैं ।

'लाखों गुरुभाइयों से प्रार्थना करता हूँ कि...'

मेरा बेटा नरेश त्रिवेदी प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू की महानता के विषय में नित्य प्रेम भरी निगाहों से देखता था । पूज्य बापू का उठना-बैठना, चलना-फिरना, खाना-पीना आदि देखने में उसकी बहुत रुचि थी । पूज्य बापू को इस बात का पता चला । उन्होंने कहा :

''भैया ! दूर से कितना देखेगा ? तू मेरा अंतेवासी सेवक, सैक्रेटरी, रसोइया सब बन जा ।''

...और इस तरह नरेश वर्षों तक पूज्यश्री के साथ रहा । पूज्य बापू का रसोईघर भी वही संभालता था और साथ ही 'ऋषि प्रसाद' का काम भी ।

पूज्य बापू उसे कभी-कभार सत्संग करने भेजते । उनकी कृपा से वह सत्संग भी अच्छा करता था । पूज्य बापू ने उसे ज्यों-ज्यों निकटता दी त्यों-त्यों पूज्य बापू के लिए उसकी श्रद्धा-भक्ति बढ़ती गई । वह मुझे भी बार-बार पूज्य बापू की महिमा बताता रहता था ।

जीवन के अन्तिम दिनों तक पूज्य बापू में उसकी अटूट श्रद्धा-भक्ति रही और पूज्य बापू की महती कृपा उस पर रही ।

एक बार हृषीकेश में डॉ. प्रेमजी मकवाणा, श्री कौशिकभाई पटेल व दूसरे गुरुभाइयों के साथ नरेश गंगा में स्नान करने गया । बरसाती गंगा अपने तेज प्रवाह के कारण तीन-चार साधकों को खींचकर ले जा रही थी । छटपटाकर निकलनेवाले तो किनारे लग गये लेकिन भँवर में फँसा मेरा पुत्र, जिसका प्यार का नाम सी. आई. डी. रखा गया था, गंगाजी के भँवर का शिकार हो गया ।

साधकों ने चारों तरफ दौड़-धूप मचायी, गुरुभाइयों ने पुलिस थाने में रिपोर्ट की, बैराज तक कई चक्कर काटे किन्तु पता न लगा ।

ऐसे मेरे सुपुत्र के लिये निंदक लोग बेनामी नौ-नौ कागज भरकर कुप्रचार करने लग गये हैं जिसमें आश्रम और आश्रम के संचालकों के प्रति, ब्रह्मनिष्ठ संत के प्रति कुप्रचार का षड्यंत्र चला रहे हैं । वे अभागे लोग उन कागजों में अपना नाम नहीं लिखते हैं ।
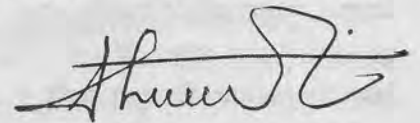
मैं तो लाखों गुरुभाइयों से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे बेनामी कागज लिखकर समाज को गुमराह करनेवाले उन गिने-गिनाये लोगों की खोज की जाय और हमारी भावनाओं को आघात पहुँचाने के (लागणी दुभाने के) एवं बदनक्षी के पाँच-पाँच करोड़ के दावे किये जायें ।

पूज्य बापू उदार हैं, क्षमाशील हैं इसका मतलब यह नहीं कि जनता को, समाज को गुमराह करनेवाले स्वार्थी, असामाजिक तत्त्वों के प्रति हम भक्त लोग उदासीन रहें ।

घटित घटना को विकृत रूप देकर, अनर्गल बातें बनाकर ऑफिसरों व नेताओं को वे टाइप किये हुए बेनामी पन्ने भेजने व बाँटनेवालों की जाँच की जानी चाहिए और उन पर कानूनी कदम उठाने चाहिए ।

पूज्य गुरुदेव ने मेरे सुपुत्र नरेश (सी. आई. डी.) की माँ को कैन्सर के रोग से बचाया । हमारे जीवन में पथ-पथ पर उनका स्नेह और सहानुभूति एवं उनकी कृपा सदैव बरसती रहती है । ऐसे सद्गुरु पूज्यपाद आसारामजी बापू के चरणों में मेरे प्रणाम हैं ।

- नरेश (सी. आई. डी.) का पिता

(सत्येन्द्रभाई त्रिवेदी)

❀

आलू

आलू एक प्रचलित खाद्य पदार्थ है । सब्जी बनाने में विशेष रूप से इसका उपयोग किया जाता है । आयुर्वैदिक मतानुसार आलू शीतल, मधुर, रुक्ष, पचने में भारी, मल को बाँधनेवाला, शरीर को भारी करनेवाला, रक्तपित्तनाशक, मल-मूत्र निस्सारक, बलकारक, पोषक एवं दुग्धवर्धक है ।

इसे बिना छिलके के अधिक मात्रा में सेवन करने से पेट में अफारा होता है । गरम मसाला एवं अदरक इसके दोषों को नष्ट करता है । स्वच्छ पानी में इसको अच्छी तरह धोकर छिलके सहित पकाकर खाया जाय तो मोटापा नहीं बढ़ता, अपितु शरीर की आवश्यकतानुसार सम्पूर्ण आहार व पोषण मिलता है । शरीर में रक्त वृद्धि होती है । शरीर सुडौल एवं बलशाली बनता है ।

इसको तलकर खाने से मोटापा बढ़ता है ।

जिस पानी में आलू को उबाला गया हो उस पानी को फेंकें नहीं अपितु उसमें पोषक तत्त्व होने के कारण उसी पानी में सब्जी आदि बनाना चाहिये ।

इसके उबले पानी में इसके छिलकों को पीसकर चेहरे पर लगाने से त्वचा के रंग में निखार आता है । दुबला-पतला व्यक्ति भी यदि प्रतिदिन छिलके सहित आलू का सेवन करता है तो वह भी हृष्ट-पुष्ट हो जाता है ।

कच्चे आलू को पीसकर जले हुए स्थान पर लगाने से राहत महसूस होती है । आलू एक संतुलित खाद्य पदार्थ है । इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट के साथ ही विटामिन 'ए' तथा 'सी' भी पाया जाता है जो कि आँख एवं त्वचा के लिये लाभप्रद है । इसके अलावा इसमें और भी महत्त्वपूर्ण खनिज पाये जाते हैं ।

वैज्ञानिकों के मतानुसार मधुमेह (डायबिटीज) के रोगी को इसका सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि इसके सेवन से ब्लड में ग्लूकोज की मात्रा कहुत बढ़ जाती है ।

यह कफ बढ़ानेवाला, वायुवृद्धि करनेवाला, बलप्रद, वीर्यवर्धक और अल्प मात्रा में अग्निवर्धक है ।

रक्तपित्त से पीड़ित बने, निर्बल, परिश्रमी व तेज जठराग्निवालों के लिये आलू अत्यंत पोषक है ।

मंदाग्नि, गैस व मधुमेह से ग्रस्त व रोगी व्यक्ति के लिये आलू का सेवन हितावह नहीं है ।

अग्निमांद्य, अफारा, वातप्रकोप, ज्वर, मलावरोध, त्वचारोग, रक्तविकार, अपच व उदरकृमि से पीड़ित व्यक्ति आलू का सेवन कम करे ।

तेरी मरजी पूरण हो...

विशुद्धानंद सरस्वती नाम के एक संत हिमालय की किसी गुफा में रहकर ध्यान-समाधि करते थे और रोज मीलों चलकर बद्रीनाथ के दर्शन करने के लिए जाते थे । एक दिन आकाशवाणी हुई कि : 'वर्षों से रोज चलकर बद्रीनाथ के दर्शन करने का जो तुम्हारा नियम है एवं तुम जो जप-ध्यानादि करते हो, वह सब भगवान् के यहाँ स्वीकार नहीं हुआ...।'

आकाशवाणी सुनकर वे नाचने लगे :

'स्वीकार नहीं हुआ... उसने अस्वीकार कर दिया... लेकिन यह खबर उस तक पहुँच तो गयी है कि मैं इतना कर रहा हूँ । उसने भले अस्वीकार कर दिया किन्तु खबर तो उस तक पहुँच ही गयी । वाह प्रभु ! वाह ।'

प्रभुभक्त कैसे निराले होते हैं ! यह सुनकर कि 'ईश्वर ने अस्वीकार कर दिया' तो दुःखी होने के बजाय प्रसन्नता से नाच रहे हैं कि 'वाह प्रभु ! वाह ! खबर तुम तक तो पहुँच गयी, इतना ही काफी है । फिर तू स्वीकार करे कि इन्कार, तेरी मर्जी । तेरी मर्जी पूरण हो...

मौत के मुख से सकुशल वापसी

आज तक तो साधकों के मुख से सुना ही था कि श्रीआसारामायण का पाठ करनेवाले साधकों की रक्षा स्वयं पूज्यश्री ही करते हैं परन्तु गत दिनों मेरे जीवन में भी ऐसा प्रसंग आया कि उन अनुभवसंपन्न साधकों में मैं भी शरीक हो गया। घटना १७ सितम्बर ९६ की है। मैं दिल्ली से करीब १.३० बजे दिन को हरियाणा रोड़वेज की बस से जयपुर के लिए रवाना हुआ। जैसे ही बस दिल्ली से बाहर निकली, मैंने श्रीआसारामायण का पाठ आरंभ किया लेकिन कितनी ही बार पाठ बीच-बीच में खण्डित होने लगा। एक ओर जैसे कोई मुझे पाठ करने में विघ्न पैदा कर रहा था तो मानो दूसरी ओर कोई मुझमें पाठ सतत कराने की प्रेरणाशक्ति का संचार कर रहा था। यह सब क्या हो रहा था ? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। जैसे ही पाठ पूर्ण हुआ, मैं निश्चिन्त हो खिड़की के सहारे टिककर सोने की कोशिश कर रहा था कि यकायक मैं जिस ओर बैठा था उस ओर की सभी खिड़कियों के शीशे टूटने शुरू हो गये और बस जो कि ६०-७० कि. मी. की गति से भाग रही थी, संतुलन बिगड़ जाने से सड़क के नीचे उतर गई और लगा कि बस अब पलटनेवाली ही है। बस में कोहराम मच गया। सभी यात्रियों ने अपनी जान बचाने के लिये अगली सीट के पाईप पकड़ रखे थे। बस के असंतुलन की दशा को देख ऐसा लग रहा था, जैसे सभी मौत के मुख में प्रवेश कर चुके हैं।

यद्यपि बस में सर्वत्र जोर-जोर से चीखें आ रही थीं, किन्तु मेरे मुख से स्वाभाविक ही 'गुरुदेव... गुरुदेव...' निकलने लग गया। मानो मेरे भीतर से कोई इस संकट की घड़ी से उबारने के लिये गुरुदेव को पुकार रहा था। मैंने देखा कि सामने एक बबूल का बड़ा पेड़ है और बस उससे टकराकर चकनाचूर होने ही वाली है। मैंने आँखें बन्द कर लीं और हृदयपूर्वक पूज्यश्री को पुन: पुकारा। बस, फिर तो मानो चमत्कार हो गया ! श्रीआसारामायण की इन पावन पंक्तियों का प्रत्यक्ष अनुभव हो गया।

सभी शिष्य रक्षा पाते हैं।
सूक्ष्म शरीर गुरु आते हैं॥
धर्म कामार्थ मोक्ष वे पाते।
आपद रोगों से बच जाते॥

मैं क्या देखता हूँ कि बस उसी क्षण बबूल के पेड़ के पास खड्डे में धंस जाने से रुक गई और मुझे तो क्या, बस में सवार किसी भी यात्री का बाल भी बाँका नहीं हुआ। सभी यात्रियों को पूज्यश्री की असीम अनुकंपा से एक नया जीवन मिल गया। मुझे आज पता चला कि किस तरह हृदयपूर्वक पुकारने से गुरुदेव सूक्ष्म शरीर से आकर शिष्यों की तो क्या, सभी की रक्षा करते हैं। हम भले ही गुरुदेव को शिष्य-अशिष्य की परिधि में अपनी मानवीय बुद्धि से बाँधें लेकिन वे तो पूरे विश्व के गुरु हैं। सचमुच, पूरी मानव जाति पूज्यश्री को पाकर कृतार्थ हो चुकी है।

- महेन्द्रपाल गौरी
डिप्टी मैनेजर
एच. एम. टी. लि., अजमेर (राजस्थान)

गुरुसेवा की भावना आपकी रग-रग में, नस-नस में, प्रत्येक हड्डी में एवं शरीर के तमाम कोषों में गहरी उत्तर जानी चाहिए। गुरुसेवा की भावना को उग्र बनाओ। उसका बदला अमूल्य है।

- स्वामी शिवानंदजी

संस्था समाचार

गोरखपुर : अयोध्या के बाद उत्तर प्रदेश की पावनभूमि पर, गोरक्षनाथ मंदिर परिसर में दिनांक : १६ से २० अक्तूबर तक पाँच दिवसीय सत्संग समारोह संपन्न हुआ । श्रद्धालुओं की भीड़ से खचाखच भरे पांडाल में भव्य व्यासपीठ से शांति के तीन रूपों पर व्याख्या करते हुए पूज्यश्री ने कहा :

''संसार में आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक शांति मुख्य हैं । श्रीकृष्ण के ध्यान की शांति अद्भुत है । ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा से ही मन में आत्मिमक शांति आती है ।''

इस सत्संग-समारोह में तकरीबन दस हजार स्कूली बच्चों को मार्गदर्शन देते हुए पूज्यश्री ने कहा : *''बच्चों को जीवित महापुरुषों से प्रेरणा ग्रहण कर, प्रातःकालीन योग व अन्य सहज क्रियाओं का नियमित अभ्यास करके अपनी आत्शक्ति विकसित करनी चाहिए ।''*

पूज्यश्री के गोरखपुर आगमन पर विशाल पैमाने पर उनका स्वागत किया गया । सारा शहर स्वागत-द्वारों एवं अभिनंदन के लिएं बनाये गये सैकड़ों तोरणों से सुशोभित था । सत्संग के शुभारंभ में श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार सर्व हितकारी कन्या विद्यालय की बालिकाओं द्वारा स्वागतगान प्रस्तुत किया गया था । पाँच दिन तक पूज्यश्री की करुणापूर्ण, शान्त, स्निग्ध एवं विनोदी वाणी पूरे गोरखपुरवासियों को विमुग्ध करती रही ।

यहाँ सत्संग की पूर्णाहुति के पश्चात् कई भक्तों के साथ पू. बापू ने रेलवे के एक विशेष सेलून में नेपाल के लिए प्रस्थान किया ।

वीरगंज (नेपाल) : प्रथम बार हिन्दू राष्ट्र नेपाल में शरदपूर्णिमा के अवसर पर, दिनांक : २३ से २७ अक्तूबर तक दिव्य गीता भागवत सत्संग समारोह श्रद्धा-भक्ति से परिपूर्ण परिवेश में संपन्न हुआ ।

हिन्दू संस्कृति की महानता पर प्रकाश डालते हुए विश्ववंदनीय संत पूज्य बापू ने अपनी पीयूषवर्षी वाणी में कहा :

''विश्व की अन्य प्राचीन संस्कृतियाँ अजायबघरों में सुरक्षित हैं लेकिन हिन्दू संस्कृति आज भी दिशाहीन एवं अशान्त विश्व-समाज के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य कर रही है । हिन्दू संस्कृति का सत्संग न केवल मुक्ति देता है, वरन् सही अर्थ में जीने का ढंग सिखाकर जीवनदाता का साक्षात्कार भी करा देता है ।''

ज्ञान-ध्यान एवं सत्संग से खुशहाल होते नेपालवासियों को मार्गदर्शन देते हुए पूज्यश्री ने कहा कि : *''सत्संगविहीन देशों में अशान्ति, हिंसा और भारी अव्यवस्थाएँ फैली हुई हैं लेकिन जहाँ सत्संग होता है वहाँ शांति, सदाचार एवं समता के साम्राज्य का विस्तार होता है क्योंकि सत्संग मानव जाति को दुर्गुणों से ऊपर उठाकर अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित कर देता है । सत्संग और सद्गुरु के सान्निध्य में साधना करना ही मानव-जीवन का प्रमुख कर्त्तव्य है । चिन्तामणि लौकिक सुख दे सकता है, कल्पवृक्ष मनोकामनाओं को पूर्ण कर सकता है किन्तु सत्संग तो हृदय में वैकुण्ठ का सुख प्रस्फुटित कर देता है ।''*

पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में आयोजित इस सत्संग-समारोह ने नेपाल में मानो एक नवीन आध्यात्मिक क्रान्ति का शंखनाद कर दिया । यह पशुपतिनाथ के भोले-भाले भक्तों का प्रेम ही था जिससे उन्हें पूज्यश्री की असीम अनुकंपा से मंत्रदीक्षा के द्वारा एक नूतन जीवन मिला । हजारों की तादाद में उपस्थित श्रद्धालुओं ने पूज्यश्री के संकल्प के साथ हाथ उठाकर नशीले पदार्थों को त्यागने का साहस दिखाया । दिनांक : २६ अक्तूबर को शरदपूर्णिमा पर हिन्दुस्तान के कोने-कोने से पूज्यश्री के दर्शनार्थ आयी अपार भीड़ को देखकर ऐसा अनुभव हुआ मानो नेपाल में हिन्दुस्तान उमड़ आया । नेपाल में स्थानीय संचार मंत्री, जिलाधीश समेत कई वरिष्ठ नागरिकों ने सत्संग का लाभ लिया । पूज्यश्री के सत्संग व दर्शन हेतु पधारे साधु-संतों को प्रसाद व भेंट-पूजा देकर सत्कृत किया गया । दिनांक : २७ अक्तूबर को वायुयान द्वारा पूज्यश्री अहमदाबाद के लिए रवाना हुए ।

विसनगर : दिनांक : २९ अक्तूबर से २ नवम्बर तक विसनगर (गुजरात) के जी. डी. हाईस्कूल मैदान में हुए पाँच दिवसीय दिव्य सत्संग समारोह में हजारों-हजारों श्रद्धालुओं ने प्रथम चार दिन तक आश्रम के साधक श्री सुरेशभाई ब्रह्मचारी का एवं दिनांक : २ नवम्बर को पू. बापू की अमृतवाणी का लाभ लिया ।

कलोल : अहमदाबाद से २५ किलोमीटर दूर कलोल की धर्मप्रेमी जनता को पूज्यश्री की अमृतवाणी का लाभ दिलाने के लिए वहाँ की योग वेदान्त सेवा समिति द्वारा ९८ बार किया गया अथक प्रयास, उनकी दृढ़ श्रद्धा एवं उनका शुभ संकल्प, दिनांक : ३-११-९६ से ६-११-९६ तक कलोल में आयोजित दिव्य सत्संग समारोह के रूप में फलित हुआ । असंख्य श्रद्धालुओं के साथ-साथ गुजरात के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री केशुभाई पटेल ने भी पूज्य बापू की सत्संग-सरिता में अवगाहन किया । श्री केशुभाई पटेल सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारियों व प्रतिष्ठित नागरिकों ने पूज्यश्री को माल्यार्पण किया । दिनांक : ६-११-९६ की शाम को सत्संग-समारोह की पूर्णाहुति के बाद पूज्यश्री हिम्मतनगर आश्रम के लिए रवाना हुए ।

कोटड़ा : वनांचलों में बसे हुए निराश्रित आदिवासियों में प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी गुजरात के कोटड़ा क्षेत्र में दिनांक : ७-११-९६ को सत्संग-कार्यक्रम व विशाल भण्डारे का आयोजन हुआ जिसमें दूर-दूर से आये हुए हजारों आदिवासी भाई-बहनों ने पूज्यश्री की मंत्रमुग्ध कर देनेवाली अमृतवाणी का रसपान किया, साथ ही गुजरात के भूतपूर्व मूख्यमंत्री श्री अमरसिंह चौधरी ने भी पूज्यश्री का दर्शन व सत्संग-प्रसाद पाकर धन्यता का अनुभव किया । सत्संग की समाप्ति के बाद पूज्यश्री के सान्निध्य में आदिवासी भाई-बहनों में भोजन-प्रसाद वितरण के साथ वस्त्र, साबुन, मिठाई के पैकेट एवं दक्षिणा भी वितरीत की गई ।

अनेकों आदिवासी विस्तारों में हो रहे पूज्यश्री के इन सत्संग व भण्डारे के आयोजनों को सुनकर एवं यहाँ कोटड़ा के भण्डारे के आयोजन को देखकर अमरसिंह चौधरी भी भाव-विभोर हो उठे थे । आयोजन की समाप्ति के बाद पूज्यश्री रात्रि को ही हिम्मतनगर आश्रम पहुँच गये एवं दिनांक : १०-११-९६ को पूज्यश्री का शुभागमन अहमदाबाद आश्रम में हुआ ।

अहमदाबाद : हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक : १० नवम्बर से १२ नवम्बर तक दीपावलि महोत्सव एवं नूतनवर्ष का आयोजन पूज्यश्री के सान्निध्य में धूमधाम से संपन्न हुआ । दूर-सुदूर क्षेत्रों से अनेकों श्रद्धालुगण पूज्यश्री के सान्निध्य में महोत्सव का आनंद लूटने के लिए दो दिन पहले से ही अहमदाबाद आश्रम पहुँच गये थे ।

दीपावलि के पावन पर्व पर एक ओर प्रज्वलित दीपकों से सारा आश्रम जगमगा रहा था तो दूसरी ओर पूज्यश्री के वचनामृत से साधकों-भक्तों के हृदय में भी ज्ञान, आनंद एवं माधुर्य का प्रागट्य हो रहा था... सभी साधक-भक्त भक्ति के नित्य नवीन रस में सराबोर होते हुए बड़े खुशहाल दिख रहे थे ।

पू. बापू के सत्संग कार्यक्रम

(१) करनाल में ता. २८ नवम्बर से २ दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. स्थान : सेक्टर १२, हुडा मैदान। फोन : २५११३७, २५०१०५, २५०४६०, २३१८४, २५२०९५ **(२) हिसार में ज्ञान भक्ति योगवाणी** : ता. ४ से ८ दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग-प्रवचन ७ दिसम्बर सुबह ९-३० से १२. स्थल : पुलिस लाइन फोन : ३४९४६, ३४४९१. **(३) जोधपुर में भक्ति योग वेदान्त वर्षा** : ता. ११ से १५ दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. गांधी मैदान, सरदारपुरा फोन : (०२९१) ४२५००, ४०९५१, ४२५६८, ४८००० **(४) बड़ौदा में** : ता. १८ से २२. दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से ११-३०. शाम ३ से ५. पोलो ग्राउन्ड । फोन : (०२६५) ३२३७८७, ४८२३३३. **(५) सुरत में वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर** : २४ से २६ दिसम्बर ९६. **विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविर** : २७ से २९ दिसम्बर ९६. संत श्री आसारामजी आश्रम, वरीयाव रोड़, जहाँगीरपुरा, सूरत । फोन : ६८५३४१. **(६) आणंद (गुज.) में** : २ से ५ जनवरी ९७. स्थान : दादाभाई नवरोजी हाईस्कूल मैदान, आणंद । **(७) अहमदाबाद में उत्तरायण की वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर** : १२ से १५ जनवरी ९७. संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-५. फोन ७४८६३१०, ७४८६७०२. **(८) लुणावाड़ा (गुज.) में** : श्री सुरेशानंजी का सत्संग : २० और २१ जनवरी ९७. **पू. बापू का सत्संग एवं पूनमदर्शन** २२ और २३ जनवरी ९७. लुणावाड़ा, जि. पंचमहाल (गुज.).

सिंहावलोकन ❑ ❑ अलविदा १९९६

नवीन भारत के शिल्पी पूज्यश्री ने अपने हाथों से वर्षभर भारत के उज्जवल भविष्य को तराशा

श्री योग वेदान्त सेवा समिति

और... इस प्रकार वर्ष '९६ भी अपने साथ सैकड़ों स्मृतियों को लिये इतिहास के पन्नों पर अब अपनी उपस्थिति अंकित करवाने जा रहा है । समय बीतता ही जाता है । बस... दिन, वार और माह तो एक बहाना होता है किन्तु फिर भी अतीत की परिभाषा में जुड़ता यह एक और वर्ष साधक परिवार के लिये, साधना के पथ पर चलते जिज्ञासु समुदाय के लिये, सत्संग, सेवा और साधना के द्वारा समाज को उन्नत करने कि लिये कृतसंकल्प सैकड़ों श्री योग वेदान्त सेवा समितियों की दृष्टि में तो यह बीतता वर्ष एक आदर्श वर्ष बनने जा रहा है और आखिर यह दिव्य स्वप्न साकार भी क्यों न हो जब उस अलौकिक परिकल्पना के सृजनशिल्पी स्वयं पूज्य बापूजी ही हों...?

पूरे वर्ष भर पूज्यश्री दिन-रात कभी एक गाँव से दूसरे गाँव तो कभी एक शहर से दूसरे शहर और एक राज्य की सीमा से दूसरे राज्य की सीमाओं में तथा उससे भी पार पहुँचकर अपने मुक्त हाथों से सत्संग-अमृत लुटाते रहे । इस वर्ष पूज्यश्री की अमृतवाणी से लाभान्वित होनेवाले शहरों का सिलसिला उत्तरायण महोत्सव पर अहमदाबाद से आरंभ हुआ था जो क्रमश: पानीपत (हरियाणा), कलकत्ता, उज्जैन, मनावर, शहादा, सूरत, बापूनगर, लीमखेड़ा, इन्दौर, ग्वालियर, नई दिल्ली, शिर्डी, बाँरा, नासिक, हरिद्वार, सागवाड़ा, घाटौल, सैलाना (रतलाम), गोंडल, राजकोट, लीमड़ी, वृंदावन, पुष्कर, फरिदाबाद, अयोध्या, गोरखपुर, वीरगंज (नेपाल), कलोल, विसनगर, फजिल्का, अमृतसर, करनाल, हिसार, जोधपुर, बड़ौदा से होता हुआ वर्षान्त में सूरत में पूर्ण होने जा रहा है । वर्षभर में हिन्दुस्तान के ४३ स्थानों पर अर्थात् राष्ट्र के प्रमुख राज्यों पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, नई दिल्ली, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में पूज्यश्री के अनेकों बार सत्संग समारोह से सत्संग, साधना और सेवारूपी दैदीप्यमान भास्कर का उदय हुआ । न केवल सत्संग समारोहों वरन् वेदान्त शक्तिपात साधना शिविरों, फिर चाहे उसकी पृष्ठभूमि में उत्तरायण महोत्सव, महाशिवरात्रि महोत्सव, होली, चेटीचंड या और कोई पर्व क्यों न हो, आखिरकार लक्ष्य तो एक ही है.. सुख-शान्ति के अभाव में भटके मानव समाज को सही दिशा देकर उसे परमपथ का पथिक बनाना, उसके नीरस जीवन में प्रभुभक्ति का रस, हरिनाम संकीर्तन का रस घोलकर उसका जीवन वास्तविक रसमय बनाना ।

एक के बाद दूसरे स्थान पर, फिर तीसरे और चौथे पर सत्संग-समारोहों का कारवाँ कुछ इस तरह आगे बढ़ता रहा, जैसे विशाल समुद्र समान कोई राजकुमार की विशाल सेना । बस, फर्क है तो इतना कि सेना का लक्ष्य राज्य-राष्ट्र के हित-अहित की सीमाओं में जकड़ा होता है जबकि सत्संग का लक्ष्य तमाम संकीर्णताओं को तिलांजलि देकर क्या तो राज्य और क्या राष्ट्र वरन् समूचे विश्व को **वसुधैव कुटुम्बकम्** के रूप में जोड़कर **बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय** के मूलमंत्र को ईश्वरोपासना, गुरुसेवा के एवज से सिद्ध करना होता है और यदि ऐसे घोर कोलाहल से भरे अशान्त कलियुग में तत्त्वज्ञान का सत्संग किन्हीं ब्रह्मवेत्ता के श्रीमुख से सुनने का मौका मिल जाए तो यह इस देवभूमि की दिव्यता ही है ।

सचमुच यह भारत भूमि और भारतवासी कितने भाग्यशाली हैं कि उन्हें घर बैठे पूज्यश्री का सत्संग मिलता है । वर्षभर पूज्यश्री के सान्निध्य में प्रज्वलित सत्संग-ज्योत से अन्तर-तिमिर मिटाने का दुर्लभ अवसर

मिलता है । इस वर्ष जिस तादाद में, देश में पूज्यश्री के सत्संग-समारोह हुए, उससे सारे वातावरण में एक नयी आध्यात्मिक क्रान्ति का, वैचारिक क्रान्ति का, परिवर्तन का शंखनाद हुआ है और हो भी क्यों न जब देशवासियों को सत्संग से जीने की कला, शिविरों से जीवन को उन्नत करने की कुँजियाँ मिलती हों, संकीर्तन यात्राओं से वातावरण में हरिरस की सुरभि फैलाने का, निर्धन आदिवासी क्षेत्रों में भण्डारों से सेवा के निमित्त परमार्थ के रास्ते पर आगे कदम रखने का सुअवसर मिलता हो ।

पिछले थोड़े-ही अन्तराल में जिस गति से हमारे सामाजिक परिवेश में अनियमितताओं-अव्यवस्थाओं ने पैर जमाये हैं, उनके पैरों को उखाड़ने के लिये न केवल सही पथ-प्रदर्शन ही चाहिए वरन् उसके पीछे एक सशक्त आंदोलन भी उतना ही जरूरी है जो पूज्यश्री के सत्संग आयोजनों से स्वत: ही इस वर्ष विशेषत: जन्म लेकर तेजी से यौवन की ओर अग्रसर होता देखा-पाया गया । हमारा समाज अब कदाचित् पीछे नहीं है किन्तु उतना आगे भी तो नहीं... इसलिये उसे चाहिए एक समग्र दिशा-निर्देशन जो उसने पूज्यश्री के सान्निध्य में इस वर्ष पाया । भारत को फिर से महिमामय करने के पूज्यश्री के संकल्प को वर्ष १९९६ में साकार होते देखने का अवसर मिला, जो सही मायने में गौरव का विषय है ।

इस वर्ष सत्संग समारोह की स्मृतियों में दिल्ली में आयोजित भव्य द्वितीय विश्व शान्ति सत्संग समारोह एवं देश के प्रमुख तीन नगरों नई दिल्ली, अहमदाबाद और इन्दौर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव विशेष रूप से अंकित रहे हैं तो सांईबाबा की नगरी शिर्डी, भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या और भगवान श्रीकृष्ण के पावन चरणारविन्द से ओतप्रोत वृंदावन में पूज्यश्री का सत्संग एक अनूठे अभूतपूर्व आयोजन के इतिहास बन गये और इन पवित्र स्थलों की शोभा सत्संग की आभा से और भी अधिक निखरती चली । शरदपूर्णिमा के अवसर पर दूसरी ओर हिन्दू राष्ट्र नेपाल में प्रथम बार सत्संग ने तो नेपालवासियों का मानो जीवन ही बदल दिया । ध्यान, योग, साधना के पथ से पूरी तरह अपरिचित नेपालवासियों को सत्संग और मंत्रदीक्षा के एवज में मानो एक नया जीवन मिल गया ।

अन्ततोगत्वा, कहने का अभिप्राय संक्षेप में बस इतना ही है कि इस देश में जहाँ-जहाँ इस वर्ष सत्संग-गंगा बही, वहाँ-वहाँ से आनंद, माधुर्य, स्नेह, समता और सहानुभूति रूपी पुष्पों ने इस हिन्दुस्तान की बगिया को सुरभित कर दिया । धन्य है यह हिन्दुस्तान... जिसे ऐसे आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार किये हुए अलख के औलिया संतश्री का सान्निध्य और सत्संग तो मिला ही है किन्तु लाखों-लाखों संतृप्त हृदयों में ईश्वरीय कृपा की अनुभूति कराने का अवसर संतश्री की सेवा के निमित्त प्राय: मिल जाया करता है । विश्ववंदनीय सनातन धर्म के अमृत-सन्देश, गीता-भागवत के ज्ञान से यह बगिया बस यूँ ही खिलखिलाती रहे... इन्हीं मंगल कामनाओं को संजोए इस अलविदा होते वर्ष में अर्जित आपकी आध्यात्मिक संपदा पूज्य गुरुदेव के शुभाशिष से दिनों-दिन नूतनवर्ष में फलती-फूलती रहे... यही हमारी परमेश्वर से प्रार्थना है ।

साधना की बगिया में
जो कलियाँ आयी इस वर्ष में,
वे सभी बनकर सौरभ खिल जाएँ...
आगन्तुक नूतन मंगल वर्ष में ।
और, हिन्दुस्तान की डाल-डाल पर,
शोभित हो आत्मज्ञान के फल...
बस यही है शुभ कामना आज और कल ॥

आपको पता है कि...

हमारा अधिकांश समय भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की कल्पनाओं में व्यर्थ ही खराब हो जाता है जबकि बीती बातों के चिन्तन से कोई लाभ नहीं होता और भविष्य की कल्पनाओ में उलझने से कुछ हाथ नहीं लगता । इसलिये सावधान रहें कि व्यर्थ चिन्तन और कपोल कल्पनाएँ आपका अनमोल समय न खा जाएँ । वर्त्तमान का सदुपयोग करना सीखें और प्रसन्न रहें ।

ग्वालियर आश्रम में प्रत्येक रविवार को विडियो सत्संग का लाभ लेते भक्तजन

लुधियाना में प्रति रविवार सत्संग-सुधा के पान में तन्मय भक्त

भैरवी आश्रम मे हुए बाल शिविर में भ्रामरिक प्राणायाम का अभ्यास करते भारत के नन्हे लाल

गुजरात के भूतपूर्व मुख्यमंत्री अमरसिंह चौधरी व डी. एस. पी. डाह्याभाई वणझारा। साथ में मथुरा के साधक मिथिलेशजी आदिवासी कोटडा (गुजरात) में पूज्यश्री के सान्निध्य में सत्संगामृत का रसास्वादन करते हुए...

गोरखपूरवासियों ने कुछ इस तरह पाया पूज्यश्री के मुखारविद से प्रवाहित सत्संग गंगा मे स्नान करने का मौका।
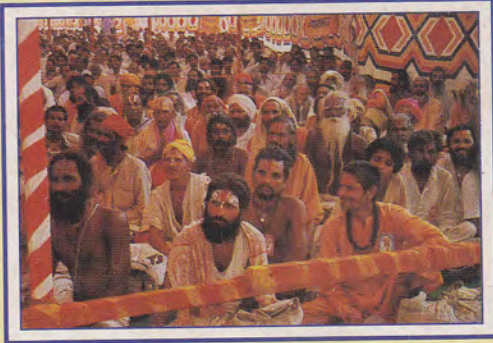
हर कदम आगे बढाएँगे। भारत की शान बढाएँगे।
गोरखपूर की छात्राएँ पूज्यश्री के सत्संग में।

पूज्यश्री की पियूवर्षी वाणी में अवगाहन करती गोंडल की धर्मप्रेमी जनता (सौराष्ट्र)